वर्तमान युग भारतीय संगीत का स्वर्णयुग (1947 ई. से वर्तमान तक)

DR. JAGJIT SINGH
Assistant Professor (Vocal Music) Department of Music, Khalsa College, Patiala, Panjab

सार संक्षेपिका

वर्तमान काल संगीत की दृष्टि से बहुत उल्लेखनीय है। वर्तमान युग से तात्पर्य उस युग से है, जो भारत के आजाद होने के उपरांत आरंभ हुआ। कला एवं संगीत के क्षेत्र में इस युग में जितनी प्रगति एवं विकास हुआ है, उतना इतने कम समय में पहले कभी नहीं हुआ। भारत सरकार ने संगीत के कलाकारों की दिल खोल कर मदद की। नये संगीत संस्थानों की स्थापना हुई। फिल्म एवं अन्य संचार माध्यमों ने भी संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। सरकार कलाकारों के नये आश्रयदाता के रूप में सामने आई। आकाशवाणी, दूरदर्शन ने भी कलाकारों को कला–प्रदर्शन के नवीन अवसर प्रदान किए। संगीत सम्मेलनों, निजि संगीत संस्थाओं, आदि ने भारतीय संगीत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कंप्यूटर के प्रयोग, नवीन वाद्यों के प्रचलन, विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयो में सगीत विषय आदि के द्वारा संगीत वर्तमान में अपनी स्वर्णिम आभा को समस्त जगत में फैला रहा है।

बीज शब्द

संगीत्, स्वर्णयुग, भारतीय संगीत

भूमिका

वर्तमान काल संगीत की दृष्टि से बहुत उल्लेखनीय है। कला एवं संगीत के क्षेत्र में इस युग में जितनी प्रगति एवं विकास हुआ है, उतना इतने कम समय में पहले कभी नहीं हुआ। वर्तमान युग से तात्पर्य उस युग से है, जो भारत के आजाद होने के उपरांत आरंभ हुआ। इस की समय–सीमा बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से मानी जा सकती है।

जब भारत आजाद हुआ, उस समय भारतीय संगीत की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। जिन रियासतों ने संगीत के कलाकारों को संरक्षण देने का महत्वपूर्ण कार्य किया था, वे सब समाप्त हो रहीं थीं। कलाकारों के लिए कोई आश्रयस्थल नहीं दिखाई दे रहा था। ऐसे समय में भारत सरकार ने इन कलाकारों की दिल खोल कर मदद की। नये संगीत संस्थानों की स्थापना हुई। फिल्म एवं अन्य संचार माध्यमों ने भी संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। सरकार कलाकारों के नये आश्रयदाता के रूप में सामने आई।

आकाशवाणी एवं कालांतर में दूरदर्शन ने भी कलाकारों को कला–प्रदर्शन के नवीन अवसर प्रदान किए। संगीत सम्मेलनों का एक नया दौर शुरू हुआ। यद्यपि भातखंडे इस परंपरा का आरंभ पहले ही कर चुके थे, किंतु इसका विकास आजादी के बाद के काल में ही तेजी से हो पाया।

भारत की आजादी के समय संगीत की स्थिति

आजादी की खुशखबरी भारतवासियों को विभाजन की त्रासदी के साथ मिली। हम आजाद हुए, मगर दो टुकडों में बँट कर। आजादी के तुरंत बाद हिंदू–मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगों का जो दौर आरंभ हुआ, उसने भारतीय जनमानस को हिला कर रख दिया। संगीत कलाकार भी दो भागों में

बँटने पर विवश हो गये। कुछ भारत में रह गये और कुछ पाकिस्तान चले गये। लेकिन दोनों ओर के कलाकारों का दर्द उनकी रचनाओं में स्पष्ट देखा जा सकता था। यदि उस समय के संगीत कलाकारों की बात की जाये, तो हम कह सकते हैं कि भारत में शास्त्रीय संगीत के उच्च कोटि के कलाकार थे। उस्ताद बड़े गुलाम अली खां, जो पहले पाकिस्तान चले गये थे, भारत वापस आ गये। यह उनका निजी फैसला था कि भारत को ही अपना निवास–स्थान बनायेंगे।

इसी काल में एक अन्य कलाकार ने भी संगीत पर बहुत प्रभाव डाला। इनका नाम था, पंडित कृष्णराव शंकर पंडित। पं. कृष्णराव शंकर पंडित का जन्म २६ जुलाई, सन १८९३ ई में ग्वालियर के निकट एक सांगीतिक परिवार में हुआ था। इनके पिता शंकर पंडित अपने समय के एक सुविख्यात संगीतज्ञ थे। संभवतः इसीलिए आपकी स्कूली शिक्षा की अपेक्षा संगीत की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया गया। आपकी प्रारंभिक संगीत शिक्षा आपके पिता के द्वारा ही हुई। पिता शंकर पंडित ग्वालियर घराने के एक माने हुए गायक थे। इनके सुपुत्र श्री लक्षमण कृष्णराव पंडित भी एक सुविख्यात कलाकार थे, जिन्होंने अपने घराने का नाम रौशन किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में प्रोफेसर के रूप में कार्य करते हुए अनेक विद्यार्थियों को संगीत की शिक्षा दी।

सितार का इमदादखानी घराना भारत में ही रहा। तबले के कलाकारों में उस्ताद अहमद जान थिरकवा, अल्लारक्खा खाँ, पंडित शामता प्रसाद इत्यादि अपने अपने ढंग से संगीत की सेवा करते रहे। ध्रुवपद सम्राट डागरबंधुओं ने तथा बाद में उनके वंशजों ने भी संगीत के क्षेत्र में बहुत योगदान किया।

१९५० ई के आस–पास भारत में हिंदुस्तानी संगीत के जो प्रमुख केंद्र थे, उनमें उत्तरप्रदेश का बनारस का इलाका, लखनऊ, रामपुर आदि, मध्यप्रदेश में ग्वालियर, भोपाल, दिल्ली, पंजाब के अनेक क्षेत्र सम्मिलित थे। गांधर्व महाविद्यालय की संस्थागत शिक्षा का प्रचार हो रहा था। लखनऊ में भातखंडे विद्यापीठ भी अच्छा काम कर रहा था। सरकार ने भी संगीत के शिक्षण प्रशिक्षण पर पर्याप्त ध्यान दिया।

प्रशासनिक तंत्र और संगीत

प्रशासनिक स्तर पर सरकार ने संगीत को औपचारिक शिक्षा के एक विषय के रूप में स्वीकार किया तथा इसे शिक्षा के हर स्तर में सम्मिलित करने का प्रयास किया। विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर संगीत–विभाग बनाये गये। सन् १९५३ ई में मौलाना अबुल कलाम आजाद के प्रयासों से संगीत नाटक अकादमी की स्थापना हुई। उद्घाटन भाषण देते हुए उन्होंने ये विचार व्यक्त किए थे–

'संगीत, नाटक और नृत्य, भारत की ऐसी बहुमूल्य विरासत है जिसकी हमें कद्र करनी चाहिए और इसका विकास करना चाहिए। हमें ऐसा सिर्फ अपने लिए ही नहीं बल्कि मानवजाति की सांस्कृतिक विरासत के प्रति योगदान के रूप में करना चाहिए। बने रहने का मतलब नया बनाना है। यह

कला के क्षेत्र में जितना सच है उतना और कहीं नहीं। परम्पराओं का संरक्षण नहीं किया जा सकता है बल्कि नयी परम्पराएं बनाई जा सकती हैं इस अकादेमी का यह लक्ष्य होगा की हमारी परम्पराओं का सरंक्षण करें और इसके लिए इन्हें संस्थागत रूप दिया जाए."

आकाशवाणी और दूरदर्शन

आकाशवाणी और दूरदर्शन ने भी संगीत के प्रचार एवं प्रसार में पर्याप्त योगदान किया है। आकाशवाणी के लिए अंग्रेजी पर्याय है – आल इंडिया रेडियो। वैसे तो इस का आरंभ निजी कंपनी के रूप में सन् १९१५ ई में ही हो गया था। लेकिन सन् १९३६ ई में इसे औपचारिक रूप से भारतीय प्रसारण सेवा के रूप में ब्रिटिश सरकार द्वारा स्वीकार किया गया।

आज आकाशवाणी का प्रशासनिक कार्य एक नयी संस्था देखती है। इसका नाम है प्रसार भारती। यह एजेंसी भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतरगत कार्य करती है। आज आकाशवाणी भारत के ९५ प्रतिशत लोगों की मनोरंजन एवं अन्य आवश्यकताओं को पूरा करती है। संगीत के अनेक कार्यक्रम आकाशवाणी से हर रोज प्रसारित होते हैं। शास्त्रीय संगीत ही नहीं, वरण् लोक संगीत, फिल्म संगीत तथा पाश्चात्य संगीत के कार्यक्रम भी आकाशवाणी से प्रसारित किए जाते हैं। दूरदर्शन भी शास्त्रीय संगीत की सेवा निरंतर कर रहा है। राष्ट्रीय प्रसारणों में संगीत तथा नृत्य के अनेक कार्यक्रम दिखाये जाते हैं। दूरदर्शन में शास्त्रीय संगीत के लिए अलग कार्यक्रम अधिकारी होते हैं।

संगीत सम्मेलन

संगीत सम्मेलनों की परंपरा सबसे पहले पंडित भातखंडे के द्वारा आरंभ की गयी। बाद में धीरे–धीरे इनकी संख्या अधिक होती गयी। आज अनेक प्रसिद्ध संगीत सम्मेलन हर वर्ष होते हैं। इन संगीत सम्मेलनों में अनेक मूर्धन्य कलाकारों के साथ–साथ नये कलाकारों को भी मंच प्रदर्शन का अवसर प्राप्त होता है। कुछ प्रसिद्ध संगीत सम्मेलन इस प्रकार हैं

सर शंकरलाल गांधर्व संगीत महोत्सव,

आई. टी. सी. द्वारा आयोजित संगीत सम्मेलन दिल्ली,

स्वामी हरवल्लभ संगीत सम्मेलन (जालंधर)

नादनर्तन का वार्षिक महोत्सव

इसके अतिरिक्त, अन्य संस्थाओं के द्वारा भी ऐसे आयोजन होते रहते हैं। इस संदर्भ में एक संस्था का उल्लेख आवश्यक हो जाता है। "सोशल प्रोमोशन आफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक ऐंड कल्चर अमंग्स्ट यूथ" यानी स्पिकमैके एक ऐसी संस्था है, जो विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में छोटे छोटे

संगीत कार्यक्रमों का आयोजन कर के छात्र–छात्राओं में शास्त्रीय संगीत के प्रचार का कार्य कर रही है। यह संस्था नये प्रतिभाशाली कलाकारों को भी मंच प्रदान करती है।

भारतीय संगीत विदेशों में

संचार एवं परिवहन साधनों में विकास के कारण आज हमारा संगीत अपने देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी सराहा जाता है। पंडित रविशंकर, जो एक कुशल सितार वादक एवं कुशल गुरु थे, उन्होंने विदेशों में भारतीय संगीत को बहुत सम्मान दिलाया। बाद में अन्य कलाकारों के द्वारा भी इसी परंपरा का निर्वहन किया गया। वैसे उदयशंकर ने भी इस परंपरा को काफी आगे विस्तृत किया। निखिल बैनर्जी, अली अकबर खां, पंडित भीमसेन जोशी, पंडित जसराज, उस्ताद जाकिर हुसैन इत्यादि अनेक कलाकारों ने भारतीय संगीत का परचम विदेशों में लहराया है।

इंडियन काउंसिल आफ कल्चरल रिलेशंस (आई.सी.सी.आर.) भी इस दिशा में काफी काम कर रही है। इस संस्था के सौजन्य से प्रत्येक वर्ष अनेक संगीत कलाकार विदेशों में जाकर भारतीय संगीत का प्रचार करते हैं। इनमें संगीत शिक्षक भी होते हैं और मंच कलाकार भी। ये कलाकार विदेशियों में भारतीय संगीत के प्रति रुचि उत्पन्न करने का कार्य करते हैं। इस संस्था के द्वारा किये गये कार्यों से इतना तो हुआ ही है कि अब विदेशी नागरिक भी भारतीय संगीत को सीखने में दिलचस्पी लेने लगे हैं। आज अनेकों विदेशी अनेक भारतीय संगीत विधायें सीख रहे हैं।

आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है। संचार एवं यातायात के साधनों ने पूरी दुनियां को सिकोड़ कर एक छोटा सा गाव बना दिया है। आज विश्व के किसी भी कोने में घट रही हर घटना से हम कुछ क्षणों में ही हम परिचित हो जाते हैं। संगीत भी भूमंडलीकरण के इस दौर से अछूता नहीं है। आज भिन्न–भिन्न देशों एवं क्षेत्रों के संगीत को मिलाकर नये प्रयोग किये जा रहे हैं। इस प्रयोग को आरंभ में फ्यूजन का नाम दिया गया था।

इस परंपरा का समारंभ हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत के कलाकारों ने किया था। कर्नाटक संगीत के कलाकारों ने हिंदुस्तानी संगीत के कलाकारों के साथ कयी प्रयोग किये, जिसमें एक राग लेकर उसका कर्नाटकी रूप तथा हिंदुस्तानी रूप एक साथ गाकर अथवा बजाकर प्रस्तुत किया गया।

कालांतर में यही कार्य पाश्चात्य संगीत के साथ भी किया गया। पंडित रविशंकर ने इसकी शुरुआत की। पॉप गायकों की एक मंडली (बीटल्स) के एक प्रसिद्ध गिटारवादक के साथ मिलकर उन्होंने सितार पर एक रचना बजाई। बाद में यह प्रयोग काफी लोकप्रिय हुआ। अन्य कलाकारों ने भी ऐसे प्रयोग किये। आज फ्यूजन का यह चलन काफी आम हो गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि आज के युग में एक क्षेत्र का संगीत दूसरे क्षेत्र के संगीत को बहुत प्रभावित कर रहा है। यह पारस्परिक सांगीतिक प्रभाव यद्यपि शास्त्रीय संगीत पर कम है, और लोक एवं पॉप संगीत पर अधिक है, तथापि शास्त्रीय संगीत इस प्रभाव से अछूता रह गया हो, ऐसा

भी नहीं कहा जा सकता। आज के शास्त्रीय संगीत कलाकार नवीन प्रयोगों के लिए परंपरागत कलाकारों की अपेक्षा अधिक खुले एवं तैयार प्रतीत होते हैं। एक जमाना था जब हमारे शास्त्रीय संगीत के कलाकार अपनी आवाज रेकार्ड कराने से यह सोच कर डरते थे कि उनकी आवाज की विशेषताएं मशीन कैद कर लेगी। लेकिन आज परिस्थितियां बिल्कुल बदल गयीं हैं। आज के कलाकार पाश्चात्य संगीत कलाकारों के साथ कंधे से कंधा मिला कर काम कर रहे हैं। आज हिंदुस्तानी संगीत एवं कर्नाटक संगीत के बीच अनेकों लेन–देन हो रहे हैं। अनेकों कर्नाटक संगीत में प्रचलित रागों को हिंदुस्तानी संगीत में अपनाया गया है। वसंत, चारुकेशी इत्यादि ऐसे रागों के उदाहरण हैं। इसी प्रकार हमने नवीन प्रयोगों को खुले दिल से स्वीकार किया है। इस प्रकार, हम देखते हैं कि आज निश्चय ही हमारा संगीत भारत की सीमाएं पार कर भूमंडलीकरण की शक्तियों के साथ समावेशित हो रहा है।

नवीन वाद्यों का प्रचलनरू

यद्यपि यह दुर्भाग्य का विषय है कि हमारे संगीत के कुछ परंपरागत वाद्य आज कम बजाये जा रहे हैं। इन में से कुछ प्रकार तो जैसे लुप्तप्राय ही हो गये हैं। सुरबहार भी कम ही सुनने को मिलता है। लेकिन कुछ नये वाद्य भी हमारे शास्त्रीय संगीत में इन दिनों शामिल हुए हैं। इन वाद्यों में से कुछ तो पहले से ही हमारे लोक संगीत में विद्यमान थे, लेकिन कुछ निश्चय ही नवीन वाद्य हैं जो आधुनिक युग की देन हैं।

संतूर एक ऐसा वाद्य है, जो बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ही शास्त्रीय संगीत में सम्मिलित हुआ है। यह वाद्य कश्मीरी लोक संगीत से शास्त्रीय संगीत में आया है। पंडित शिवकुमार शर्मा ने इस वाद्य के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

हार्मोनियम आधुनिक युग की एक और नयी खोज है। इसे दक्षिण पूर्व एशिया से ग्रहण किया गया। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह एक पाश्चात्य वाद्य है, लेकिन "हार्मोनियम इन नार्थ इंडियन म्युजिक" के रचयिता बर्झिट एबल्स इस बात को उचित नहीं मानते। उनके अनुसार, यह वाद्य श्री लंका तथा अन्य दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों से विकसित होता हुआ भारत पहुँचा। आधुनिक युग में यह वाद्य भारतीय शास्त्रीय संगीत में पूरी तरह से स्वीकार कर लिया गया है।

शहनाई, बाँसुरी, सारंगी इत्यादि जिन वाद्यों को मध्यकालीन शास्त्रीय संगीत में विशेश मान्यता नहीं मिल पायी थी, उन्हें आधुनिक समय में बहुत महत्वपूर्ण वाद्यों मे रूप में स्वीकार किया गया। उपर्युक्त सभी वाद्यों का आधुनिक युग में स्वतंत्र वादन भी हो रहा है, और ये वाद्य संगति वाद्यों के रूप में भी इस्तेमाल किये जा रहे हैं।

इलेक्टरोनिक वाद्यों का प्रचार

इस युग में तकनीकी विकास के कारण अनेक इलेक्टरानिक वाद्यों का भी विकास हो रहा है। तबले का इलेक्टरानिक विकल्प आज सरलता से उपलब्ध है। इसके अनेक रूप जिनमें अनेक ताल तथा अनेक किस्म की ध्वनियां विद्यमान हैं, आज सरलता से उपलब्ध हैं। यद्यपि इस प्रकार का इलेक्टरानिक तबला अभी मंच पर तो नहीं आ पाया है, लेकिन रियाज के लिए इसका खूब इस्तेमाल हो रहा है। इसी प्रकार, इलेक्ट्रानिक तानपुरा भी आ गया है। इसके अनेक रूप आज उपलब्ध हैं। कुछ इलेक्ट्रानिक तानपुरों में तो स्वरमंडल के तारों की भी व्यवस्था की गयी है जिन्हें राग के अनुसार मिलाया जा सकता है। ऐसे तानपुरे सबसे पहले कर्नाटक संगीत के कलाकारों द्वारा स्वीकार किये गये। लेकिन आज हिंदुस्तानी संगीत के कलाकारों द्वारा भी इलेक्ट्रानिक तानपुरे का प्रयोग किया जा रहा है। वायलिन, बांसुरी इत्यादि वाद्यों के कलाकार तानपुरे के इलेक्ट्रानिक रूप का ही प्रयोग कर रहे हैं।

लोकप्रिय संगीत में इलेक्ट्रानिक वाद्यों के अन्य रूप भी प्रचार में आ गये हैं। इलेक्टानिक वाद्यों के साथ–साथ आज हम संगीत वाद्यों को एम्प्लीफायी भी कर सकते हैं। सितार, मोहन–वीणा आदि के वादक अपने वाद्यों को एक एम्प्लीफायर से जोड़ कर बजाते हैं, इससे उन के वाद्य की ध्वनि काफी अधिक हो जाती है। वाद्य की बारीकियां अधिक मुखर हो उठती हैं। आज कल सितार वादक, वायिलिन वादक आदि भी इस तकनीक का खूब प्रयोग कर रहे हैं।

संगीत और संचार माधयम

संचार माध्यमों में विकास के साथ ही संगीत में भी काफी विकास हो रहा है। आज इंटरनेट पर संगीत के सभी रूप सरलता से उपलब्ध हैं। आज संगीत सुनने के लिए हमें उतनी कठिनायी महसूस नहीं होती जितनी मध्य काल के लोगों को होती रही होगी। आज यू ट्यूब पर हर प्रकार का संगीत उपलब्ध है। यदि हमारे पास इंटरनेट की सुविधा है, तो हम सरलता से किसी भी कलाकार का संगीत सुन सकते हैं और उसका विडियो भी देख सकते हैं। आज संगीत मोबाइल फोन के माध्यम से हमारी जेबों मे, हमारी उँगलियों के नीचे आ गया है। हम अपनी इच्छा के अनुरूप, किसी भी कलाकार के संगीत को सिर्फ कुछ बटन दबाकर ही सुन सकते हैं। इससे शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में काफी मदद मिली है।

कंप्यूटर और संगीत

इस युग के संगीत पर विचार करते हुए यदि कंप्यूटर की बात न की जाये, तो कुछ अटपटा सा लगता है। कंप्यूटर ने हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। फिर संगीत भला कंप्यूटर के प्रभाव से कैसे बच सकता था। कंप्यूटर ने संगीत के विकास में काफी मदद की है। आज कंप्यूटर के माध्यम से संगीत से संबंधित अनेक काम बहुत सरल हो गये हैं। हम संगीत की दृश्य–श्रव्य रेकार्डिंग सरलता से कर सकते हैं। उसे किसी भी रूप में कापी कर सकते हैं। उसकी अनेक प्रतिलिपियां हम

सरलता से तैयार कर सकते हैं। उसे इंटरनेट पर अपलोड करके अपने मित्रों के साथ शेयर कर सकते हैं। आज फेस बुक, यूट्यूब, ट्विटर जैसे अनेकों सामाजिक नेटवर्क हैं, जिन पर संगीत को भी अन्य चित्रों एवं समाचारों की तरह भेजा जा सकता है। इससे हम अपनी संगीत रचना का प्रचार सरलता से कर सकते हैं।

पत्र–पत्रिकाओं में संगीत

आज संगीत से संबंधित अनेक पत्र–पत्रिकायें निकल रही हैं। इनमें अनेक संगीत प्रेमियों के लेख छपते हैं। संगीत से संबंधित सूचनायें एवं समाचार आज सरलता से प्राप्त हो जाते हैं। पत्र–पत्रिकाओं में संगीत–सम्मेलनों की भी खूब चर्चा रहती है। संगीत से संबंधित सेमीनार एवं वर्कशाप भी खूब होते हैं। इनसे संबंधित आर्टिकल्स भी शीघ्र ही छप जाते हैं। इस से संगीत पत्रकारिता को बहुत बल मिला है। आज हम हर बड़े समाचारपत्र में अन्य पत्रकारों के साथ एक कला–पत्रकार को भी देखते हैं। संगीत के विद्यार्थियों के लिए यह एक नया व्यवसाय बन कर उभरा है। आज संगीत के विद्यार्थी पत्रकारिता में डिप्लोमा करके पत्रकारिता के क्षेत्र में भी किस्मत आजमा सकते हैं।

संगीत से रोगों का उपचार

आधुनिक समय एक ऐसा समय है, जब हर व्यक्ति बहुत कम समय में बहुत अधिक की कामना कर रहा है। हर मनुष्य रातों–रात लखपति, करोड़पति बन जाना चाहता है। आगे बढ़ने की इसी होड़ का यह परिणाम है कि हम में से बहुत से लोग मानसिक तनाव का शिकार हो रहे हैं। पारस्परिक भाईचारे की जगह कड़ी प्रतिस्पर्धा ने ले ली हैं। फलस्वरूप हर इन्सान तनावग्रस्त होता जा रहा है। हँसी और मुस्कुराहट तो जैसे चेहरों से गायब सी होती जा रही है। इसी लिए फोटो खींचते समय कहना पड़ता है, "स्माइल प्लीज"। वैसे तो इस तनाव से बचने के कई नुस्खे हैं, पर हम यहाँ जिस नुस्खे की बात करना चाहते हैं वह है, संगीत।

आधुनिक लोकप्रिय संगीत और फिल्मी संगीत, जिस का न सिर है न पैर, वास्तव में संगीत की श्रेणी में आना ही नहीं चाहिए। लेकिन यह हमारे समय का एक दुर्भाग्य ही है कि इस शोरशराबे को भी हम संगीत का नाम देते हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत ही वास्तव में हमें तनाव से मुक्ति दे सकता है। इसलिए संगीत सुनने वाले श्रोताओं को अच्छी कोटि का संगीत ही सुनना चाहिए चाहे वह शास्त्रीय संगीत हो या लोकसंगीत, उसका स्तर उत्तम कोटि का होना चाहिए।

उत्तम कोटि का संगीत तनाव मुक्ति में निश्चय ही सहायक है। हम सबको संगीत अवश्य सीखना चाहिए। यदि किसी कारण यह संभव न हो सके तो अच्छा संगीत तो अवश्य ही सुनना चाहिए। इस से हम अवश्य ही तनावमुक्त हो सकेंगे। तनाव मुक्त होकर हम अपनी शक्ति समाज के सृजनात्मक कार्यों में और अधिक सक्रियता के साथ लगा सकेंगे।

इसी लिए आजकल अस्पतालों में रोगोपचार के साथ साथ अच्छा संगीत सुनने की भी सलाह दी जाती है। डाक्टर अब हे मानने लगे हैं कि संगीत रोगों के उपचार में मदद करता है। इसीलिए संगीत से संबंधित इस प्रकार के शोध हो रहे हैं, जिन से यह पता लगाया जा सके कि किस प्रकार संगीत रोगोपचार में सहायता करता है। लेकिन यह तो सच है कि यह क्षेत्र संगीत के विद्यार्थियों के लिए इम्मीद की एक नयी किरण लेकर आया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि आदुनिक संगीत अनेक चरणों को तय करते हुए आज की स्थिति तक पहुँच पाया है। आज संगीत के जिस रूप को हम देखते हैं अथवा जो संगीत हम सुनते हैं, उस रूप को प्राप्त करने के लिये संगीत को एक लंबी विकास की यात्रा तय करनी पड़ी है। संगीत के विकास में हर युग का अपना योग्ज़दान रहा है इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता परन्तु तथ्यों के आधार पर देखें तो यह कहा जा सकता है कि संगीत का र्वतमान युग संगीत का स्वर्णयुग है।

BIBLIOGRAPHY

Kobayashi, Eriko (2003). Hindustani Classical MusicReform Movement and the Writing of History, 1900s to 1940s, The University of Texas at Austin, USA

V.R. Athavale (1967). Pandit Vishnu DigambarPaluskar, National Book Trust, Ansari Road, Delhi.

Laxmi Narayan Garg (1984). Hamare Sangeet Ratna, Sangeet Karyalya, Hathras

Shankar, Ravi (2007). My music, My life, Mandala Publishing.

Richard G. Fox, ed. (1983). Recapturing Anthropology: Working in the Present, Santa Fe: School of American Research Press.

Dr. Sudha Patwardhan (2016). Sangeet shiksha, Kanishka Publishers. New Delhi

Hari Kishan Goswami (2014). Bhartiye Sangeet Ki Parampara- Vanshanukram Evam Vatavaran, Kanishka Publishers. New Delhi

Pandit Shankar Pandit, Tushar Pandit (2014). Bhartiye Sangeet ke Mahaan SangeetkarKanishka Publishers. New Delhi

David, M.D. (1995). The City of Dreams, Himalay Publishing House, Bombay